TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(04 March 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- भारत तांबे की आपूर्ति सुरक्षित करने के लिए वैश्विक स्तर पर क्यों होड़ में हैं?
- भारतीय वित्तीय प्रणाली में ऋण लेने वाली महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि
- भारत का पहला विस्तृत नदी डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी
- MCQ

भारत तांबे की आपूर्ति सुरक्षित करने के लिए वैश्विक स्तर पर क्यों होड़ में हैं?

परिचय:

- भारत सरकार ने 27 फरवरी को, जाम्बिया में तांबे और कोबाल्ट की खोज के लिए एक 9,000 वर्ग किलोमीटर के ब्लॉक को हासिल करने की घोषणा की, जो उच्च श्रेणी के भंडारण के लिए जाना जाता है। देश में घरेलू खदानों में उत्पादन में कमी के साथ, यह परियोजना भारत के लिए विदेशी खनन परिचालन स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।
- उल्लेखनीय है कि 25 फरवरी को, अमेरिका राष्ट्रपति के कार्यालय ने "तांबे के आयात से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा" पर एक तथ्य पत्रक में चेतावनी दी कि "विदेशी तांबे पर अत्यधिक निर्भरता" "अमेरिकी रक्षा क्षमताओं, बुनियादी ढांचे के विकास और तकनीकी नवाचार को खतरे में डाल सकती है"।
- वहीं 17 फरवरी को, ब्लूमबर्ग ने बताया कि तांबे के अयस्क की आपूर्ति कम होने के साथ, चीन गलाने की अधिक क्षमता पर लगाम लगाने की दिशा में आगे बढ़

रहा है। वर्तमान में चीन दुनिया की आधी गलाने और शोधन क्षमता को नियंत्रित करता है।

तांबे का खनन क्यों महत्वपूर्ण है?

- इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बैटरियों और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के नेतृत्व में तांबे की मांग 2035 तक खदानों से आपूर्ति को पीछे छोड़ देगी, भारत, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने और घरेलू क्षमताओं को मजबूत करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अगले दशक में तांबे की दौड़ और भी तेज हो जाएगी।
- उल्लेखनीय है कि तांबे की उत्पादन मूल्य श्रृंखला में, अयस्क को सांद्र में संसाधित किया जाता है, एनोड में गलाया जाता है, और कैथोड में परिष्कृत किया जाता है - यह छड़, चादरें, तार और अन्य औद्योगिक इनपुट का उत्पादन करने के लिए आवश्यक है। जबकि अधिक रीसाइक्लिंग और वैकल्पिक बैटरी रसायन प्राथमिक आपूर्ति पर दबाव को कम कर सकते हैं, वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए खनन महत्वपूर्ण बना हुआ है।

भारत का तांबा खनन के लिए विदेशी फोकस:

- उल्लेखनीय है कि तांबा भारत में एक महत्वपूर्ण खनिज के रूप में सूचीबद्ध है। 2023-24 में घरेलू तांबा अयस्क उत्पादन 3.78 मिलियन टन (एमटी) था, जो 2018-19 की तुलना में 8% कम था। चालू वित्त वर्ष में अप्रैल और जनवरी के बीच, एकमात्र घरेलू तांबा खननकर्ता, सरकारी स्वामित्व वाली हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड, द्वारा अयस्क उत्पादन साल-दर-साल 6% कम था।
- घरेलू अयस्क उत्पादन में स्थिरता के कारण, भारत का तांबा आयात 2018-19 से 2023-24 में मूल्य के लिहाज से दोगुना होकर 26,000 करोड़ रुपये हो गया है। जबकि भारत में तांबे के बड़े भंडार हैं, खनन शुरू होने से पहले उन्हें व्यापक अन्वेषण की आवश्यकता होती है। वैश्विक स्तर पर तांबे की खदान को चालू करने में औसतन 17 साल तक का समय लगता है।
- ऐसे में अल्पावधि में तांबे की मांग को पूरा करने के लिए, भारत जाम्बिया, चिली और डेमॉक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो (DRC) जैसे तांबा समृद्ध देशों में ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड दोनों खनिज परिसंपत्तियों को सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा है। इन देशों में तांबा खनिज आमतौर पर भारत की तुलना में उच्च ग्रेड की होती है - और खनन पर उनके व्यापक ध्यान के कारण, परियोजनाएँ तेज़ी से विकसित

हो सकती हैं। हालांकि, विदेशी खनिज परिसंपत्तियों में निवेश में महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक जोखिम होते हैं।

भारत का अफ्रीका पर विशेष ध्यान:

- वर्तमान में तांबा, लिथियम और प्राकृतिक ग्रेफाइट जैसे महत्वपूर्ण खनिजों के उत्पादन में अफ्रीका की हिस्सेदारी बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) ने पिछले साल एक रिपोर्ट में कहा गया है कि यह महाद्वीप पहले से ही वैश्विक कोबाल्ट उत्पादन का 70% और वैश्विक तांबा उत्पादन का 16% हिस्सा है। 2030 तक DRC दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तांबा आपूर्तिकर्ता बनने की राह पर है।
- भारत को जाम्बिया के उत्तर-पश्चिमी प्रांत में सरकार-से-सरकार के आधार पर 9,000 वर्ग किलोमीटर का ब्लॉक मिला है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) इस भूमि का अन्वेषण करेग। पड़ोसी कॉपर बेल्ट प्रांत में, वेदांत समूह के पास एक बड़ी तांबे की खदान है। उल्लेखनीय है कि जाम्बिया दुनिया में तांबे का सातवाँ सबसे बड़ा उत्पादक है। (चिली, पेरू और DRC क्रमशः नंबर 1, 2 और 3 हैं।)
- भारत का खनन मंत्रालय DRC, तंजानिया, मोजाम्बिक और रवांडा में नोडल अधिकारियों के माध्यम से अन्वेषण के लिए अधिक महत्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों का अधिग्रहण करने के लिए काम कर रहा है, लेकिन अन्य देशों से प्रतिस्पर्धा कड़ी रहेगी।

भारतीय वित्तीय प्रणाली में ऋण लेने वाली महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि:

चर्चा में क्यों है?

- भारत की वित्तीय प्रणाली में ऋण लेने वाली महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, 2019 और 2024 के बीच महिलाओं द्वारा ऋण की मांग में तीन गुना वृद्धि हुई है।
- ट्रांसयूनियन सिबिल और नीति आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, 2024 को समाप्त पिछले पांच वर्षों में भारत में खुदरा ऋण लेने वाली महिला उधारकर्ताओं की संख्या 22 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ी है।
- उल्लेखनीय है कि यह वृद्धि वित्तीय व्यवहार में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है, जिसमें महिलाएँ व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ऋण का लाभ उठा रही हैं।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि महत्वपूर्ण बात यह है कि ऋण लेने वाली लगभग 60 प्रतिशत महिला उधारकर्ता अर्ध-शहरी या ग्रामीण क्षेत्रों से हैं।

महिलाओं द्वारा ऋण लेने से जुड़े ट्रेंड:

व्यावसायिक ऋण:

- व्यावसायिक उद्देश्य के लिए ऋण के लिए महिलाओं द्वारा लगभग 37 लाख नए ऋण खाते खोले गए, जिनमें कुल 1.9 लाख करोड़ रुपये वितरित किए गए।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 2019 से व्यावसायिक उद्देश्य के लिए खोले गए खातों की संख्या में 4.6 गुना वृद्धि हुई है, लेकिन ये ऋण 2024 में महिला उधारकर्ताओं द्वारा लिए गए कुल ऋणों का केवल 3 प्रतिशत है।

व्यक्तिगत वित्त आवश्यकता:

- व्यक्तिगत वित्त आवश्यकताओं (व्यक्तिगत ऋण, उपभोक्ता टिकाऊ ऋण, गृह स्वामित्व, वाहन ऋण) के लिए ऋण महिलाओं द्वारा लिए गए ऋणों का एक बड़ा हिस्सा बना हुआ है। 4.8 लाख करोड़ रुपये मूल्य के 4.3 करोड़ ऐसे ऋण खोले गए। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में महिलाओं द्वारा लिए गए सभी ऋणों में से ये 42 प्रतिशत हैं।

गोल्ड लोन:

- महिला उधारकर्ताओं के बीच गोल्ड लोन ने लोकप्रियता हासिल की है, 2024 में 4.7 लाख करोड़ रुपये मूल्य के 4 करोड़ लोन महिला उधारकर्ताओं द्वारा लिए गए सभी लोन का 38 प्रतिशत हिस्सा होंगे, जो 2019 से मात्रा के हिसाब से 5.1 गुना वृद्धि है।

अपने क्रेडिट स्वास्थ्य के बारे में बढ़ती जागरूकता:

- महिला उद्यमियों के बीच क्रेडिट स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ी है। अपनी क्रेडिट सूचना रिपोर्ट और स्कोर की स्वयं निगरानी करने वाली महिलाओं की संख्या में पिछले एक वर्ष में 42 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो दिसंबर 2023 में 18.94 मिलियन से दिसंबर 2024 में 26.92 मिलियन हो गई है।
- हालांकि यह एक उत्साहजनक प्रवृत्ति है, लेकिन महिलाओं को भारत की आर्थिक कहानी में भागीदार से नेता बनने के लिए इसे जारी रखना चाहिए।

महिला उधारकर्ताओं के समक्ष चुनौतियां:

- ऋण जागरूकता और ऋण स्वास्थ्य में सुधार के इन उत्साहजनक संकेतों के बावजूद, महिला उधारकर्ताओं को ऋण प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे वित्तीय संस्थानों द्वारा ऋण देने से बचना, खराब बैंकिंग अनुभव और संपार्श्विक और गारंटर से संबंधित बाधाएं।

महिलाओं के बीच ऋण स्व-निगरानी प्रवृत्ति में वृद्धि का महत्व:

- इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि कुल स्व-निगरानी आधार में महिलाओं की हिस्सेदारी दिसंबर 2024 में बढ़कर 19.43 प्रतिशत हो गई, जो दिसंबर 2023 में 17.89 प्रतिशत थी।

- उल्लेखनीय है कि जैसे-जैसे अधिक महिलाएँ कार्यबल में प्रवेश करती हैं या उद्यमी बनती हैं, औपचारिक ऋण तक पहुँच उन्हें अपने करियर को आगे बढ़ाने या अपने व्यवसाय के विकास को आगे बढ़ाने का मार्ग प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, अपने ऋण की निगरानी करने से महिला उधारकर्ताओं को अपने वित्तीय स्वास्थ्य को बनाए रखने, बेहतर ऋण शर्तों को सुरक्षित करने और पहचान की चोरी से बचाने में मदद मिलती है।
- सिबिल रिपोर्ट के अनुसार, इसके अतिरिक्त, युवा, जेन-Z (जो 1990 के दशक के मध्य और 2010 के दशक के मध्य के बीच पैदा हुई हैं) महिलाएं ऋण निगरानी में अग्रणी हैं। मिलेनियल महिलाओं (1980 से 2000 के बीच) की संख्या में भी साल-दर-साल 38 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जिससे इसी अवधि के लिए स्व-निगरानी करने वाली महिला आबादी में उनकी हिस्सेदारी 52 प्रतिशत हो गई।
- उल्लेखनीय है कि इन मैट्रिक्स में वृद्धि महिलाओं में वित्तीय जागरूकता के उच्च स्तर और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में क्रेडिट प्रबंधन उपकरणों की व्यापक स्वीकृति का संकेत देती है।

भारत का पहला विस्तृत नदी डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी:

चर्चा में क्यों है?

- देश के पहले विस्तृत नदी डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण में पाया गया है कि भारत में गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में 6,324 गंगा डॉल्फिन हैं और पंजाब में ब्यास नदी बेसिन में तीन सिंधु नदी डॉल्फिन हैं।
- उल्लेखनीय है कि 2021 और 2023 के बीच किए गए इस सर्वेक्षण में गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों के 8,406 किलोमीटर लंबे हिस्से (इसकी सहायक नदियों सहित) और ब्यास नदी के 101 किलोमीटर लंबे हिस्से को शामिल किया गया।

नदी डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 3 मार्च को गिर राष्ट्रीय उद्यान में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की 7वीं बैठक के दौरान डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण के परिणाम जारी किए।

- उल्लेखनीय है कि यह सर्वेक्षण भारतीय वन्यजीव संस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, असम, झारखंड, राजस्थान के राज्य वन विभागों तथा गैर-लाभकारी संगठनों जैसे कि आरण्यक, विश्व वन्यजीव कोष, टर्टल सर्वाइवल एलायंस और भारतीय वन्यजीव ट्रस्ट द्वारा किया गया था।

प्रथम नदी डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्ष:

- 6,324 गंगा डॉल्फिन में से 3,275 मुख्य नदी तंत्र में पाई गईं, जबकि 2,414 गंगा की सहायक नदियों में पाई गईं जबकि 584 ब्रह्मपुत्र के मुख्य तंत्र में पाई गईं।
- डॉलफिन रेंज राज्यों में, उत्तर प्रदेश में 2,397 डॉल्फिन, बिहार में 2,220, झारखंड में 162, राजस्थान और मध्य प्रदेश में 95, पश्चिम बंगाल में 815, असम में 635 और पंजाब में तीन डॉल्फिन की गणना की गई।
- उत्तर प्रदेश में, डॉल्फिन की सबसे ज्यादा मौजूदगी या जमावड़ा चंबल नदी में भिंड-पचनदा के 47 किलोमीटर के हिस्से में पाया गया।
- कानपुर-विंध्याचल के 380 किलोमीटर लंबे हिस्से में 1.89 डॉल्फिन/किमी की दर पर पायी गयी थी। 366 किलोमीटर लंबे नरौरा से कानपुर के बीच के हिस्से में डॉल्फ़िन की आबादी लगभग न के बराबर थी।

- इस सर्वेक्षण में पाया गया कि बिहार में घाघरा, गंडक, कोसी और सोन जैसी सहायक नदियों के कारण पानी की अपेक्षाकृत अधिक गहराई और आदर्श नदी आकारिकी के कारण अधिकांश हिस्सों में डॉल्फ़िन की आबादी बढ़ रही है। चौसा-मनिहारी से गंगा की मुख्य धारा को कवर करने वाले 590 किलोमीटर के हिस्से में 1,297 डॉल्फ़िन हैं, जो इसे सबसे घनी आबादी वाले हिस्सों में से एक बनाता है।

गंगा डॉल्फिन क्या है?

- डॉल्फिन परिवार में भारतीय नदी डॉल्फिन (Platanista gangetica) की दो मौजूदा प्रजातियां शामिल हैं - सिंधु नदी डॉल्फिन (Platanista gangetica minor) और गंगा नदी डॉल्फिन (Platanista gangetica gangetica), दोनों को 1970 के दशक तक एक ही प्रजाति माना जाता था।
- गंगा डॉल्फिन अक्सर अकेले या छोटे समूहों में पाई जाती हैं, और नावों के आस-पास बेहद शर्मीली मानी जाती हैं, जिससे वैज्ञानिकों के लिए उन्हें देखना मुश्किल हो जाता है। एक वयस्क डॉल्फिन का वजन 70 किलोग्राम से 90 किलोग्राम के बीच हो सकता है। वे मछलियों, अकशेरुकी आदि की कई प्रजातियों को खाते हैं।
- वे अपनी सीमा में कई स्थानीय नामों से जाने जाते हैं जिनमें हिंदी में सुसु, सूंस, सोन्स या सूस, बंगाली में शुशुक, असमिया में हिहो या हिहू और नेपाली में

भागीरथ, शूस या सुओंगसू शामिल हैं। सांस्कृतिक रूप से, इस प्रजाति को अक्सर गंगा से जोड़ा जाता है और कभी-कभी इसे देवी गंगा के वाहन के रूप में दर्शाया जाता है।

- सिंधु और गंगा दोनों डॉल्फिन को 1990 के दशक से अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) की लाल सूची में 'लुप्तप्राय' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। यह वर्गीकरण दर्शाता है कि इस प्रजाति के "जंगली में विलुप्त होने का बहुत अधिक जोखिम है"।

देश में डॉल्फिन के संरक्षण के प्रयास:

- यही कारण है कि 1980 के दशक से ही इस दुर्लभ प्रजाति को संरक्षित करने और इसकी आबादी को 20वीं सदी से पहले के स्तर पर वापस लाने के लिए कई प्रयास किए गए हैं।

वन्यजीव अधिनियम संरक्षण की अनुसूची में जुड़ाव:

- 1985 में गंगा एक्शन प्लान की शुरुआत के बाद, सरकार ने 1986 में गंगा डॉल्फिन को भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की पहली अनुसूची में शामिल किया।

- इसका उद्देश्य शिकार पर रोक लगाना और प्रजातियों के लिए वन्यजीव अभयारण्य जैसी संरक्षण सुविधाएं प्रदान करना था। उदाहरण के लिए, इस अधिनियम के तहत बिहार में विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभयारण्य की स्थापना की गई थी।

डॉल्फिन संरक्षण योजना:

- भारत सरकार ने गंगा नदी डॉल्फिन 2010-2020 के लिए संरक्षण कार्य योजना तैयार की, जिसमें "गंगा डॉल्फिन के लिए खतरों और नदी यातायात, सिंचाई नहरों और डॉल्फिन आबादी पर शिकार-आधार की कमी के प्रभाव की पहचान की गई"।
- विचार यह था कि उन कारकों की समग्र रूप से पहचान की जाए जो प्रजातियों की आबादी में गिरावट का कारण बन रहे थे, और इन मुद्दों को संबोधित किया जाए।

राष्ट्रीय जलीय जानवर:

- 2009 में, तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने गंगा नदी डॉल्फिन को भारत का राष्ट्रीय जलीय जानवर घोषित किया, जो कि प्रजातियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसके संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने का एक प्रयास था।

प्रोजेक्ट डॉल्फिन:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 15 अगस्त, 2020 को प्रोजेक्ट डॉल्फिन का शुभारंभ किया गया, जो इस प्रजाति के संरक्षण में सहायता करने का नवीनतम प्रयास है।

इस परियोजना की घोषणा करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह परियोजना प्रोजेक्ट टाइगर की तर्ज पर होगी, जो देश में बाघों की आबादी को पुनर्जीवित करने में सफल रही है।

- विशेष रूप से, प्रोजेक्ट डॉल्फिन गंगा नदी की डॉल्फिन को एक "छाता प्रजाति" के रूप में देखता है, जिसका संरक्षण "मानव सहित संबंधित आवास और जैव विविधता की भलाई में योगदान देगा"।

MCQs

1. भारत द्वारा तांबे की आपूर्ति सुरक्षित करने की पहलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. तांबा को भारत में एक महत्वपूर्ण खनिज के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
   2. भारत द्वारा जाम्बिया, चिली और डीआरसी जैसे तांबा समृद्ध देशों में खनिज परिसंपत्तियों को सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा है।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

   Ans:(c)

2. हाल ही में भारत का पहला विस्तृत नदी डॉल्फिन जनसंख्या सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी किया गया है। इस सर्वेक्षण के अनुसार भारत में सिंधु नदी डॉल्फिन की कितनी संख्या है?

   (a) 3

   (b) 3,275

   (c) 6,324

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

   Ans:(a)

3. चर्चा में रहे 'प्रोजेक्ट डॉल्फिन' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. यह गंगा नदी की डॉल्फिन को एक "छाता प्रजाति" के रूप में देखता है।
2. डॉल्फिन के संरक्षण की एक पहल के रूप में इसकी शुरुआत 15 अगस्त, 2020 को की गई थी।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(c)

4. हाल ही में नीति आयोग द्वारा समर्थित एक रिपोर्ट में भारतीय वित्तीय प्रणाली में ऋण लेने वाली महिलाओं की वस्तुस्थिति के बारे में बताया गया है। इस रिपोर्ट के अनुसार निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) 2019 और 2024 के बीच महिलाओं द्वारा ऋण की मांग में तीन गुना वृद्धि हुई है।

(b) ऋण लेने वाली लगभग 60% महिला उधारकर्ता अर्ध-शहरी या ग्रामीण क्षेत्रों से हैं।

(c) 2019 से व्यावसायिक उद्देश्य के लिए गए ऋण संख्या में 4.6 गुना वृद्धि हुई है।

(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।

Ans:(d)

5. चर्चा में रहे भारत द्वारा तांबा खनन के लिए विदेशी फोकस के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत में तांबे के बड़े भंडार हैं, अतः उसे वैश्विक स्तर पर अन्वेषण की आवश्यकता नहीं है।

2. भारत को जाम्बिया में 9,000 वर्ग किलोमीटर का ब्लॉक मिला है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल

(b) 1 केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(b)